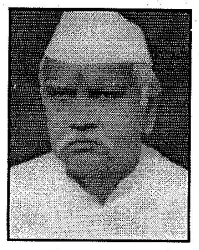

डॉ0 शिवराम सिंह गौर
संरक्षक
व्यवस्था परिवर्तन गठबन्धन
9453286099

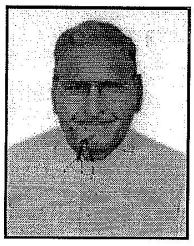

संसार चन्द्र
राष्ट्रीय अध्यक्ष
व्यवस्था परिवर्तन गठबन्धन
8800901448, 8826721028

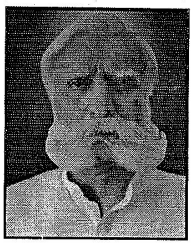

केसरी सिंह गुर्जर
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
व्यवस्था परिवर्तन गठबन्धन
9310173131

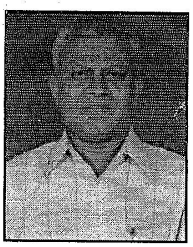

मृत्युन्जय शर्मा
राष्ट्रीय मुख्य महासचिव
व्यवस्था परिवर्तन गठबन्धन
8287593483

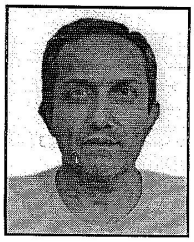

अनुज कौशिक
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
व्यवस्था परिवर्तन गठबन्धन
8287966427

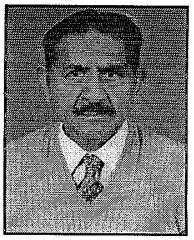

रामचन्द्र जैन
प्रशासक–केन्द्रीय कार्यालय
संगठन मंत्री
9899650074

व्यवस्था परिवर्तन गठबंधन स्थापित (23.1.2000)

निज़ाम का बदलाव; CHANGE OF SYSTEM ALLIANCE

601, रोहित हाऊस, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली–110001,
राष्ट्रीय अध्यक्ष – संसार चन्द्र–8800901448, 8826721028, मुख्य महासचिव–मृत्युंजय शर्मा–8287593483
www.vyavasthaparivartan.org, E-mail : changeofsystem8@gmail.com

लक्ष्य–जनता, राजनैतिक दलों, स्वयंम सेवी संस्थाओं एवं मीडिया को न्यूनमत साझा कार्यक्रम बनाने में सहयोग करना। इसके लिए निम्न विचार बिन्दू प्रस्तावित है।

''सत्यमेव जयते, वसुधैव कुटुम्बकम्, एकम् सद, विप्रा बहुदा वदन्ति''

सत्य की हमेशा जीत होती है। विश्व एक बडा परिवार है। सत्य तो एक ही है। ज्ञानी लोग इसे अनेक प्रकार से समझाते है। व्यवस्था परिवर्तन का लक्ष्य समाज की सभी समस्याओं को जड से समाप्त करने का है। जनता से इसमें सहयोग चाहिए। आजकल कोरोना महामारी से लाखों नागरिक रोज मर रहें है। पर लोग सोचते है कि वो तो नहीं मरेगें, यदि मर भी गऐ तो धन सम्पत्ति अपने साथ ले जायेगें। पर ऐसा होता नहीं। धन सम्पत्ति के असीमित उत्तराधिकार से बच्चीं/बच्चे अक्सर बिगड जाते है। और अपराधी बनकर जीवन में कष्ट भोगते है। अतः आगे के 4 पेज ध्यान से पढ़ें। गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित महाभारत द्वितीय खण्ड, वनपर्व, में, यक्ष नें युधिष्ठिर से पूंछा और युधिष्ठिर का जवाब, किसी भी नागरिक को कभी नहीं भूलना चाहिए।

यक्ष उवाच – को मोदते किमाश्चर्यं कः पन्थाः का च वार्तिका।,
ममैतांश्चतुरः प्रश्नान् कथयित्वा जलं पिब।।114।।

यक्ष ने पूछा – सुखी कोन है? आश्चर्य क्या है? मार्ग क्या है और वार्ता क्या है? मेरे इन चार प्रश्नों को उत्तर देकर जल पीयो।।114।।,

युधिष्ठिर उवाच – पञ्चमेऽहनि षष्ठे वा शाकं पचति रवे गृहे।
अनृणी चाप्रवासी च स वारिचर मोदते।।115।।

युधिष्ठिर बोले –जलचर यक्ष! जिस पुरूषपर ऋण नहीं है और जो परदेशमें नहीं है, वह भले ही पाँचवे या छठे दिन अपने घर के भीतर साग–पात ही पकाकर खाता हो, तो भी वही सुखी है।। 115 ।।

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्तीह यमालयम्।
शेषाः स्थावरमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम् ।। 116 ।।

संसार से रोज–रोज प्राणी यमलोकमें जा रहें है, किंतु जो बचे हुए हैं वे सर्वदा जीते रहने की इच्छा करते है, इससे बढ़कर आश्चर्य और क्या होगा? ।। 116 ।।

तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्ना, नैको ऋषिर्यस्य मतं प्रमाणम्।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां, महाजनो येन गतः स पन्थाः ।। 117 ।।

तर्ककी कहीं स्थिति नहीं है, श्रुतियाँ भी भिन्न–भिन्न हैं, एक ही ऋषि नहीं है कि जिसका मत प्रमाण माना जाय तथा धर्मका तत्व गुहामें निहित है अर्थात् अत्यन्त गूढ़ है: अतः जिससे महापुरूष जाते रहे हैं, वही मार्ग है।। 117 ।।

1. युधिषठिर इस जवाब का निहितार्थ यह है कि हर नागरिक खूब ज्ञान, शक्ति और धन कमाऐ पर वह परिवार की जरूरतो के अलावा समाज को ज्ञान दान, सुरक्षा दान, धन दान तथा श्रम दान करें। **समाज में बड़े लोगों द्वारा कानून तोडने पर विशेष अदालतों द्वारा तुरन्त कड़ा दण्ड देने से सारा समाज सुधर जाएगा।**

2. **पूत सपूत तो क्यों धन सचै, पूत कपूत तो क्यो धन सचै।**
धन का असीमित उत्तराधिकार इस बात की गारंटी नहीं है कि इससे सन्तान को सुविधा के साथ ''सुख'' भी मिलेगा। सुख पाने के लिए भौतिक वाद तथा आध्यात्म वाद में सन्तुलन जरूरी है।

3. इसी लिये 50 वर्ष की आयु के बाद भारत में वानप्रस्थ परम्परा थी। अतः अब जगंलो की कमी के कारण ''समाजप्रस्थ'' परंपरा शुरू करनी होगी। जिसमें नागरिक अपने बैंक में जमा डिपोजिट के ब्याज से अपनी जरूरत को पूरा करते हुए समाज को ज्ञान, सुरक्षा और धन देना शुरू करें।

4. **असीमित उत्तराधिकार एक आर्थिक कुरीति है। संतान को सीमित उत्तराधिकार हो, धनी उद्योगों व्यापार में काम करने वाले लोगों से सम्बन्धित सभी कुटुम्ब, कौम, जाति और समाज के साधन हीन बच्चों को भी सामाजिक उत्तराधिकार मिले।**

सनातन जीवन परम्परा में ''जाति'' जन्म नहीं कर्म (व्यवसाय) के आधार पर थी। पर लोग इसे भूल गए है। निम्न विचार बिन्दू 2, 3,4 तथा 5 में यह स्पष्ट है।

1. न तु कामये राज्यं, न मोक्षम, न पुनर्भवम्।
   कामये, दु:खतप्तानाम्, प्रणिनामार्तनाशपम्।।
   (न मुझे राज्य की कामना है, न ही मोक्ष की कामना है और न ही पुर्नजन्म की कामना है। मैं तो दु:ख से पीड़ित प्राणियों के द:खनाश की कामना हूं। इसी भावना से हम सबको राष्ट सेवा करनी है।

2. चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागश:।
   (श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा कि गुण और कर्मो के अनुसार मैंने चार वर्णो (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की सृष्टि की है)

3. जन्मना जायते शूद्र: संस्कारात् द्विज उच्यते।
   (मनुष्य जन्म से शूद्र हो सकता है परन्तु कर्म से ब्राह्मण भी बन सकता है)

4. हितोपदेश में वर्णित है:–
   मातृवत् परदारेषु लोष्ठवत् परद्रव्येषु।
   आत्मवत् सर्वभूतेषु य: पश्यति स: पण्डित: ।।
   (जो दूसरे की स्त्री को माता के समान व दूसरे के धन को मिट्टी के ढेले के समान तथा समस्त प्राणियों को अपने समान समझता है, वही ज्ञानी है, वही पण्डित है तथा वही ब्राह्मण है)

5. महाकवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में कहा है–
   क्षतात् त्रायते इति क्षतिय:।
   (क्षत्रिय वही है जो सबकी रक्षा करता है अर्थात् कोई भी जाति हो, कोई भी धर्म हो, कोई भी प्राणी हो, सबकी रक्षा करने वाला क्षत्रिय है (महाराज दिलीप ने गौ की रक्षा के लिए अपने शरीर को न्यौछावर करने का प्रस्ताव किया था)

6. अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयम्।
   परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम्।।
   (अठारह पुराणों में महर्षि व्यास जी के महत्वपूर्ण दो वाक्य हैं– परोपकार करने से पुण्य मिलता है तथा दूसरों को पीड़ा पहुंचाना पाप होता है)

प्रर्यावरण संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। हरे, भरे खेत, बाग, जंगल, हरे-भरे, पहाड़, साफ नदियां हर हालत में बनाये जायेगें। इससे ही समाज का कल्याण होगा।

दिल्ली प्रदेश की सभी समस्याओं को समाप्त करने हेतु दिल्ली, हरियाणा तथा एन.सी.आर. के जिलों को मिलाकर दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) प्रदेश बनाया जायेगा। इसे पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त होगा। केन्द्रीय सरकार के सरकारी सेवको के कार्य तथा निवास क्षेत्र पर केन्द्रीय नियंत्रण रहेगा। भारत में शराब तथा अन्य नशों पर पूरी रोक रहेगी। डाक्टर या वैद्य की पर्ची पर केवल केमिस्ट ही उसे बेच सकेंगें। जयपुर में निजी क्षेत्र द्वारा एक नगर नियोजन का विश्व विद्यालय बनेगा। उसके स्नातक सारे देश में गाँवों के निकट लड़की तथा लड़कों के लिए शिक्षा ग्राम तथा उद्योग ग्राम बनायेगें। इससे आने जाने में पेट्रोल डीजल की बर्वादी रोकी जाएगी।

स्वदेशी आर्थिक दर्शन प्रकृतिवाद :

हमारे आर्थिक दर्शन का आधार भारतीय आध्यात्मवाद है। भारत के पिछले दस हजार वर्षो के इतिहास में सभ्यता तथा संस्कृति के जो श्रेष्ठ उदाहरण सामने आये उनसे इसे शक्ति मिली है। ''राज्यम् मूलम अर्थम्'' अर्थात आर्थिक दर्शन के अनुरूप ही समाज रचना होती है तथा आर्थिक दर्शन ही समाज की नैतिकता, संस्कृति तथा सभ्यता को दिशा देने में निर्णायक भूमिका निभाता है। सरकार का काम जनता को स्थानीय गुन्डों और विदेशी आक्रमण से सुरक्षा देने का है। जिस देश का राजा व्यापारी उस देश की प्रजा भिखारी। अतः सरकार सुरक्षा उद्योगों के अलावा सभी उद्योग और व्यापार जनता को बेच देगी। सभी को रोजगार पाने लायक शिक्षा-प्रशिक्षण। कृषि और उद्योग में अनुसंधान द्वारा बेरोज़गारी, मंहगाई और गरीबी को जड़ से समाप्त किया जा सकता है।

भारतीय दर्शनों में स्पष्ट रूप से पारिवारिक आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति का संचय करना गलत बताया गया है। वेदों, पुराणों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत तथा समूचे भारतीय साहित्य में इस बात को हजारों प्रकार से समझाया गया है। भारत के छोटे-छोटे गांवो में हजारों लाकोक्तियाँ इस सम्बन्ध में है। जैसे पूत कपूत तो क्यों धन संचे? पूत कपूत तो क्यों धन संचे?

उपरोक्त विश्लेषण से हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि संसार के वर्तमान समाजों में सम्पत्ति के जो असीमित उत्तराधिकार कानून बने हैं वे समाज विरोधी अथवा समाज को कमजोर और निकम्मा बनाने के लिये चालाकीपूर्ण षडयंत्र है जिससे मात्र समाज के भीतर बैठे हुए भेड़ियों को लाभ होता है। जबकि शेष बहुसंख्यक जनसंख्या जो कानूनी और नैतिक दृष्टि से उचित एवं समता मूलक जीवन बिताना चाहती है जो ईमानदारी और सच्चाई से सामाजिक सुरक्षा को सुदृढ़ करने का काम करती है, उन के लिये ये हानिकारक है।

श्रीराम तथा उनके भाई भरत ने उत्तराधिकार में, प्राप्त राज्य के त्याग, के उदाहरण का अनुकरण किये बिना हम हिन्दू होने का ढोंग कब तक करेंगे। चक्रवर्ती सम्राट, शकुन्तला पुत्र भरत जिनके नाम पर इस देश का नाम भारत हुआ उनके 18 पुत्र थे। पर उन्होने आम जनता से सबसे योग्य युवक को राजगद्दी दें कर सन्यास लिया। भीष्म ने पिता की खुशी के लिए राज्यत्याग करके ब्रमचर्य व्रत लिया। चन्द्र गुप्त मौर्य ने राज्य त्याग करके जैन धर्म अपना कर सन्यास लिया। महान अशोक ने राज्य सत्ता त्यागकर बौद्ध धर्म अपना कर सन्यास लिया। हर्ष वर्धन जैसे हजारों राजाओं ने राज्य सत्ता का त्याग किया। पन्ना दाई ने अपने कर्तव्य रक्षा के लिए अपने छोटी उम्र के बच्चे का बलिदान दिया। राजस्थान की हाडा रानी ने खुद अपना सिर काट कर उसे अपने पति के पास भिजवा दिया, ताकि वो अपना कर्तव्य शत्रु नाश कर सके। पान्डवो ने द्रोपदी सहित राज्य त्याग कर महाप्रयाण किया। भामा साह ने अपनी सारी सम्पत्ति महाराणा प्रताप को दे दी। ताकि वो देश की रक्षा कर सकें।

महाभारत के पंचम खण्ड, शान्तिपर्व में बाणों की शय्या पर लेटे भीष्म ने सतयुग की ''राज्य व्यवस्था'' के बारे में बताया। फिर यह भी बताया कि अज्ञान होने के कारण ही इसका पतन त्रेता युग, द्वापर युग से होता हुआ कलियुग तक क्यों पहुँचा। यह निम्न है।

भीष्म उवाच – नियतस्त्वं नरव्याघ्र श्रृणु सर्वमशेषत:।
यथा राज्यं समुत्पन्नमादौ कृतयुगेऽभवत् ।। 13 ।।

भीष्मजीने कहा – पुरूषसिंह! आदि सत्य युग में जिस प्रकार राजा और राज्य की उत्पत्ति हुई, वह सारा वृत्तान्त तुम एकाग्र होकर सुनो ।। 13 ।।

न वै राज्यं न राजाऽऽसीन्न च दण्डो न दाण्डिक:।
धर्मेणैव प्रजा: सर्वा रक्षन्ति स्म परस्परम् ।। 14 ।।

पहले न कोई राज्य था, न राजा, न दण्ड (अपराधी) था और न दण्ड देने वाला (अत: कानून की भी जरूरत नहीं थी) समस्त प्रजा धर्म के द्वारा ही एक-दूसरे की रक्षा करती थी ।। 14 ।।

पाल्यमानास्तथान्योन्यं नरा धर्मेण भारत ।
खेदं परमुपाजग्मुस्ततस्तान् मोह आविशत् ।। 15 ।।

भारत के सब मनुष्य धर्म के द्वारा पालित और पोषित होते थे। कुछ दिनो के बाद सब लोग पारस्परिक संरक्षण के कार्य में महान् कष्ट का अनुभव करने लगे, फिर उन सब पर अज्ञानी होने के कारण मोह छा गया ।। 15 ।।

ते मोहवशमापन्ना मनुजा मनुजर्षभ।
प्रतिपत्तिविमोहाच्च धर्मस्तेषामनीनशत् ।। 16 ।।

नरश्रेष्ठ! जब सारे मनुष्य मोह के वशीभूत हो गये, तब कर्तव्याकर्तव्यके ज्ञान से शून्य होने के कारण उनके धर्म का नाश हो गया ।। 16 ।।

नष्टायां प्रतिपत्तौ च मोहवश्या नरास्तदा।
लोभस्य वशमापन्ना: सर्वे भरतसत्तम ।। 17 ।।

भरतभूषण! कर्तव्याकर्तव्यका ज्ञान नष्ट हो जाने पर मोह के वशीभूत हुए सब मनुष्य लोभ के अधीन हो गये।।

अप्राप्तस्याभिमर्शं तु कुर्वन्तो मनुजास्तत: ।
कामो नामापरस्तत्र प्रत्यपद्यत वै प्रभो ।। 18 ।।

फिर जो वस्तु उन्हें प्राप्त नहीं थी, उसे पाने का वे प्रयत्न करने लगे। प्रभो! इतने ही में वहाँ काम नामक दूसरे दोषने उन्हें घेर लिया ।। 18 ।।

तांस्तु कामवंश प्राप्तान् रागो नाम समस्पृशत्।
रक्ताश्च नाभ्यजानन्त कार्याकार्ये युधिष्ठिर ।। 19 ।।

युधिष्ठिर! काम के अधीन हुए उन मनुष्यों पर क्रोध नामक शत्रु ने आक्रमण किया। क्रोध के वशीभूत होकर वे यह न जान सके कि क्या कर्तव्य है और क्या अकर्तव्य? ।। 19 ।।

अगम्यागमनं चैव वाच्यावाच्यं तथैव च ।
भक्ष्याभक्ष्यं च राजेन्द्र दोषादोषं च नात्यजन् ।। 20 ।।

राजेन्द्र! उन्होने अगम्यागमन, वाच्य–अवाच्य, भक्ष्य–अभक्ष्य तथा दोष–अदोष कुछ भी नहीं छोडा ।। 20 ।।

विप्लुते नरालोके वै ब्रह्म चैव ननाश ह ।
नाशाच्च ब्रह्मणो राजन् धर्मो नाशमथागमत् ।। 21 ।।

इस प्रकार मनुष्य लोक में धर्म का विप्लव हो जाने पर वेदों के स्वाध्यायका भी लोप हो गया। राजन्! वैदिक ज्ञान का लोप होने से यज्ञ आदि कर्मो का नाश हो गया ।। 21 ।।

पुन: ''सतयुग की व्यवस्था'' स्थापित करने के लिए हमें ''भागीरथ मिशन '' (गैर राजनितिक) बनाना होगा। इसमें उपरोक्त पेज 1 बिन्दु 3 में लिखे गए ''समाज प्रस्थी'' शामिल होगें। इसका दायरा कृषि, बाग और वन उपज का लाभकारी मूल्य देना, तथा किसानों को उनकी फसल की गुणवत्ता तथा उत्पादकता बढ़ा कर आयकर देने वाला नागरिक बनाना होगा तथा सभी बच्ची एवं बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य रोजगार पाने का प्रशिक्षण आदि देना होगा। देश की बंजर जमीन को उपजाऊ बनाया जायेगा। विकास कार्य का मूल्याकंन GDP के साथ Gross Domestic Happiness के आधार पर होगा।

अपरिग्रह के सर्ममान्य सामाजिक सिद्धान्त का मखौल उडाना आसान है किन्तु उसका विकल्प तलाश करना असम्भव है, अव्यावहारिक और न उपलब्ध होने वाली कल्पना है। हमारे धर्म और नीतिशास्त्रों में उदात्त और विकसित मानव, व्यक्तिगत या समाज रचना के जो दस लक्षण बताये गये हैं वे ही धर्म के मूल लक्षण हैं और धर्म प्रकृति के अनुकूल होने के सिवा और कुछ नहीं है। जो मानव विरोधी अथवा समाज विरोधी है, वह स्वस्थ और परिपूर्ण प्राकृतिक व्यवस्था का निश्चय ही विरोधी है। इसीलिये तो सर्वोत्तम राज्य व्यवस्था को महाभारत में धर्मराज्य (निज़ामें मुस्तफा) कहा गया है। प्रकृति धर्म और मानव धर्म परस्पर विरोधी अथवा परस्पर घातक नहीं, ये एक दूसरे के पर्याय है। वे एक सामंजस्य पूर्ण एवं सर्वोत्तम व्यवस्था के सहयोगी और परस्पर परिपूरक घटक है। फिर भला उदात्त एवं समभावी अथवा समदर्शी प्रज्ञा से सृजित किस समाज दर्शन में सम्पत्ति के अविवेकपूर्ण, अनुचित एवं अवैज्ञानिक वितरण को, जो निश्चय ही, विषमता–मूलक, शोषक और प्रपीड़िक सम्पत्ति के असीमित उत्तराधिकार कानूनों का परिपोषक है, नैतिक दृष्टि से उचित अथवा कानून सम्मत कहा जा सकता है? कानून का समाजशास्त्र सर्वाधिक औचित्यपूर्ण या तार्किक प्रतिपादन भी करता है। नीति विरूद्ध असीमित उत्तराधिकार न केवल समाज विरूद्ध है वरन् प्रकृति विरूद्ध भी है।

हम जानते हैं कि अखिल ब्रह्माण्ड भी प्रकृति का एक अंग मात्र ही है जब हम ''अहम् ब्रह्मास्मि'' का उद्घोष करते हैं तो मानव, प्रकृति तथा ब्रह्माण्ड के आन्तरिक सम्बन्धों को उजागर करते है। क्या प्रकृति का विरोध मानव हित साधक हो सकता है? अत्याधुनिक सभ्यता की सबसे भयानक एवं गंभीर विडम्बना भी तो यही है कि वह चरम सीमा पर कृत्रिमता को पहुँचा देने में तो सफल हो गयी किन्तु इस अदम्य अभियान की भयानक परिणति के समक्ष पराजय स्वीकार करने को विवश है। फिर भी प्रकृति को दासानुदास मानने की मूर्खता अभिमानी मनुष्य क्यों कर बैठा? मानव की महत्वाकाक्षाएँ उसे सुदूर अन्तरिक्ष की विजयश्री से विभूषित करने में सफल तो हो गई, किन्तु आधुनिकतम सभ्यता तीसरे विश्व युद्ध की अप्रत्याशित आकांक्षाओं एवं अकल्पनीय विनाश के कारणों को खुला निमन्त्रण भी दे बैठी। भारतीय मनीषियों की इस बारे में चेतावनी को सोरोकिन, टायनबी, डोस्टोवस्की, जार्ज बर्नाड शा, शूॅम पीटर, गोर्की, आइन्स्टीन तथा अरविन्द ने अपने महान साहित्यों में मुखरित किया है।

अत: हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि सम्पत्ति के असीमित उत्तराधिकार के विद्यमान सारे के सारे कानून विवेकहीनता की परिधि में निहित है। उन पर न केवल अंकुश लगाने की आवश्यकता है वरन् उनमें अमूलचूल परिवर्तन की तात्कालिक आवश्यकता है। सच्ची समाजोपयोगी क्रान्ति तभी सम्भव है जब ऐसे जड़वादी, प्रपीडक और समाजघाती असीमित उत्तराधिकार कानूनों को अविलम्ब निरस्त किया जाये। अत: मेरी मान्यता है कि कोई भी राज्य यदि वास्तविक रूप से समाज हित की व्यवस्था स्थापित करने की घोषणा करता है तो उसे निर्भय होकर यह घोषणा करनी पडेगी कि प्रकृति विरोधी तथा मानव के कल्याण के लिए सड़ते हुए नासूर सिद्ध होने वाली असीमित उत्तराधिकार के कानूनों का समूल नाश किया जाये। अत: हमारी मांग है कि ''संसार के देशों में सम्पत्ति के असीमित उत्तराधिकार को कानून द्वारा मर्यादित (सीमित) करो। तुम ऐसा करने पर अपना शोषण और प्रपीडित करने वाली व्यवस्था के विनाशकारी पाश से मुक्त हो जाओगे। ''मानव और समाज'' का सर्वतोन्मुखी एवं सर्वोत्तम सुख इसी में निहित है कि एक आवाज से हम सब मांग करें कि हमें वर्तमान समाज के असीमित उत्तराधिकार के कानूनों के राक्षसी शिकंजे से अबिलम्ब मुक्ति दिलाई जायें। इस प्रकार किसी भी सुसभ्य समाज की सच्ची प्रगति की कामना करने वाले राज्य का मात्र एक सूत्र कार्यक्रम यह होना चाहिये कि वर्तमान असीमित उत्तराधिकार कानूनों को उसके सिहांसन से खींच कर धरती पर पटक दिया जाये ताकि यह चूर–चूर होकर अपनी समाधि से एक नये समाज के सृजन का सूर्योदय देख सके। जो निरन्तर प्रकाशमान रहें, जहां दुख, दर्द, शोषण, प्रपीडन की कोई झीनी छाया भी अपना अस्तित्व रखने में नाकाम रहें।

हमारा प्रस्ताव है कि व्यक्तिगत उत्तराधिकार की अधिकतम सीमा 1 किलों सोने के बराबर के मूल्य की किसी भी प्रकार की सम्पत्ति प्रति नागरिक हो। यदि नागरिक गरीब, मध्यम या उच्च मध्यम वर्ग का है तो अपनी आमदनी का 1/3 भाग उसे अपनी बच्चीओं और बच्चों के उत्तराधिकार खाते में हर महीने बैंक में जमा कराना होगा। इसके लिए भारत के 100 धनी कम्पनियों की सरपरस्ती में मुम्बई में महबूब स्टूडियों के पास मदर इण्डिया बैंक (माँ भारती बैंक) खोला जायेगा! इसकी शाखाएँ सारे देश में होगी। अधिक जानकारी के लिए हमारी Website देखिए! www.vyavasthaparivartan.org (हिन्दी भाषा में) इसमें तीन पुस्तकें हैं। 1. प्राकृतिक दर्शन, 2. व्यवस्था परिवर्तन, 3. यूरोपीय षड़यंत्रो का खुलासा।

भारतीय संस्कति सतयुग में पूरे विश्व में थी। इसका विनाश कैसे हुआ? इसकी जानकारी पाने के लिए पढ़िये
पुरूषोत्तम नागेश ओक की सारी पुस्तकें। ये आपको
मोबाईल – 9213527666, 7065618655, ईशान अरोड़ा से मिल जायेंगी।

भारतीय संस्कृति/हिन्दोस्तानी तहजीब की मदद, सहयोग, समर्पण निधि के लिए
बैंक ऑफ इन्डिया खाता धारक संसार चन्द्र,
खाता संख्या : 600510110003771, IFSC CODE : BKID0006005 में भेज कर राष्ट्र सेवा करें।

व्यवस्था परिवर्तन की पूरी–पूरी जानकारी के लिए वेबसाइट www.vyavasthaparivartan.org, Desktop, Mobile & Computer पर 100 पेज प्रिन्ट निकाल कर ध्यान से पढ़िए।

अनुज कौशिक
कोषाध्यक्ष (नौएडा यू.पी.)
8287966427

संसार चन्द्र
संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष, व्यवस्था परिवर्तन
8826721028, 8800901448